फरीदाबाद
मजदूर समाचार

अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर **335** 1/– *मई* **2016**

लाखों पगडंडियों का फुर्तीला उभार

वकील साहब, सुना है आजकल बहुत परेशान हो। सुनने में आया है कि आपने जजों से भी अपनी परेशानी के बारे में बात की है। अफवाह तो नहीं है यह सब ?

अरे, क्या बतायें तुझे ? लेबर कोर्ट में तो लोगों का आना ही बन्द हो गया है। छुटपुट जो आ भी जाते हैं वो तारीख, दस्तावेज और गवाही के भँवर में परेशान हो जाते हैं, और छोड़ देते हैं। इसी सन्दर्भ में मैं जज को बोल रहा था कि कुछ राहत नहीं देंगे तो यह कोर्ट तो बन्द ही समझो। हमारी-आपकी रोजी-रोटी का होगा क्या?

पर वकील साहब, बात तो यह है कि आजकल के जो वरकर हैं उन को यह तो समझ आ चुका है कि कोर्ट-कचहरी के चक्कर में तो पड़ो ही मत। और बुजुर्ग जो परमानेन्ट रहे हैं उनका अनुभव भी यह रहा है कि अदालतों में तो पिस जाते हैं।

यह बात तो सही है। अदालतों के बारे में जो आम समझ है वह बहुत गहरे अनुभवों और उन पर विचारों से बनी है।

वकील साहब, आप तो लेबर लॉ छोड़ो और क्रिमिनल लॉ पकड़ो। आज के मजदूरों की पहलकदमियों को रोकने के लिये लेबर लॉ इस्तेमाल होती ही नहीं। क्रिमिनल लॉ के जरिये डराने की कोशिशें चल रही हैं।

यह तो साफ है। मजेदार बात यह है कि अदालत और न्याय की समझ यह थी कि अपराधी को काम करवा कर समाज लायक बनायेंगे। मशहूर फिल्म "दो आँखें बारह हाथ" याद है।

वकील साहब, जब बारह हाथ बारह आँखें हो गई हैं तब बनाबनाया माहौल उल्टा-पुल्टा हो गया। आप देखिये, बिना कोर्ट के दैनिक जीवन में जायज और इन्साफ की बहस कौन कर रहे हैं ? निर्णय कैसे ले रहे हैं ? लागू करने के लिये कौन से कदम उठा रहे हैं ?

यह तो आप नई दृष्टि, नये दर्शन की बात कर रहे हो। यह वकालत के पेशे की बात नहीं रही। थोड़ा-सा विस्तार में बोलो।

वकील साहब, आप हाल ही के बेंगलुरु के गारमेन्ट्स वरकरों के कदमों को देखो। प्रतिनिधियों के जरिये आवेदनों के चक्कर में पड़े नहीं। कोर्ट-कचहरी गये ही नहीं। लाखों में फैक्ट्रियों से बाहर निकले। शहर को कई घण्टे थाम दिया। पी.एफ. के मामले में सरकार पीछे हटी, तीन महीने टाला। अगले दिन फिर लाखों ने बेंगलुरु शहर को थाम दिया। सरकार को अपनी चाल रद्द करनी पड़ी। और यह, कोई बेंगलुरु का मामला नहीं था, नहीं रहा।

यह बात तो है कि यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। पूरे भारत में लागू होने वाले नियम को रद्द करवाना !

और वकील साहब, कोई नेगोशियेशन नहीं हुई। समझौता वार्ता हुई ही नहीं। जायज और इन्साफ को कैसे लागू करना है यह लाखों ने करोड़ों में पहुँचा दिया है।

लग तो यह रहा है कि हम कुछ ऐसे समय में हैं जहाँ लाखों-करोड़ों के बीच होती बहसें निर्णायक मोड़ ले चुकी हैं। यह जो लहरें हैं ये क्रिमिनल लॉ से डरा कर नहीं रुकेंगी।

वकील साहब, आप जो यह ना रुकने वाली बात बोल रहे हो, यह हम सब को थोड़ा गौर से सोचनी चाहिये। कार्यस्थलों पर तथा कार्यस्थलों के बाहर रोज ही नहीं रुकने की बात चलती रहती है। लाखों में पगडंडियाँ बनती रहती हैं। इन्साफ के सवाल खुलते रहते हैं।

तुम से बात करके दोस्त, समाज तो आज बहुत रोचक लग रहा है। कहीं पर मन में रोना-धोना था, अब हँस कर अपनी पगडंडी बनाता हूँ।

बहुत कमजोर औ

1948 में संसद में जो न्यूनतम वेतन अधिनियम पारित किया था उसके अनुसार आज न्यूनतम वेतन 50-60 हजार रुपये महीना बनता है।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जनवरी 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 7976 रुपये मासिक (8 घण्टे के 307 रुपये)
अर्ध-कुशल अ 8375 रुपये मासिक (8 घण्टे के 322 रुपये)
अर्ध-कुशल ब 8794 रुपये मासिक (8 घण्टे के 338 रुपये)
कुशल अ 9233 रुपये मासिक (8 घण्टे के 355 रुपये)
कुशल ब 9695 रुपये मासिक (8 घण्टे के 373 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक 10,179 रुपये मासिक (8 घण्टे के 392 रुपये)
5 महीने के महंगाई भ६६त्ते के 1881 से 2395 रुपये बकाया हो गये हैं।

रूप ऑटो (439-440 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-15 परमानेन्ट और 500 टेम्परेरी वरकर सुबह 6½ से साँय 5 और साँय 5 से अगली सुबह 6½ तक की शिफ्टों में वाहनों के स्टीयरिंग बनाते हैं।

इण्डिया फोर्ज (28 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 6000-6200 और सी एन सी ऑपरेटरों की 6500-8000 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की।

मोडलामा (200 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सुबह 9 से रात पौने दस बजे रोज ड्युटी, रविवार को भी।

टेटसन राय इन्टनेशनल (ई-46/5 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में गैप का माल बनाते 500 मजदूरों की 12 घण्टे की शिफ्ट। ई एस आई व पी एफ दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर काटते हैं लेकिन हैल्पर की तनखा 7200 रुपये, चैकर की 9800, टेलर को 8 घण्टे के 400 रुपये।

नवयुग इलेक्ट्रोस्पार्क (175 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में साप्ताहिक अवकाश नहीं। सुबह 9 से रात 8 और रात 8 से अगली सुबह 9 की शिफ्ट। शनिवार नाइट वाले 24 घण्टे काम करते हैं तब शिफ्ट बदलती है।

बोनी पोलीमर्स/प्राइम इण्डिया पोलीमिक्स (132सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 8-10 परमानेन्ट, 30-40 कैजुअल, और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में।

कैलाश रिबन (403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 400 की ई एस आई व पी एफ और 300 की ये नहीं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। नवम्बर 2015 से नया ग्रेड कुछ को 8 की बजाय 10 घण्टे ड्युटी पर। 300 को 8 घण्टे के 5500 देते थे, नवम्बर से 10 घण्टे के 6000 रुपये देने लगे। पहले 3½ घण्टे को ओवर टाइम कहते थे, अब यह 1½ घण्टे को कहते हैं।

दी माइसन कम्पनी (डी-12/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्पर को 8 घण्टे के 200 और टेलर को 370 रुपये। ई एस आई व पी एफ 200 मजदूरों में 10 के ही।

ए ए ऑटोटेक (158 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 50 परमानेन्ट और 2500 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में।

श्री श्याम पोलीथीन (20/3 मथुरा रोड़, नोरदर्न कॉम्पलैक्स, फरीदाबाद) फैक्ट्री में नौकरी छोड़ने पर 10-15 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। ***भारत लैदर*** (189 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में ठेकेदारों में से एक भाग गया। होली पर घर गये वरकर कम्पनी से काम किये दिनों के पैसे माँगते हैं तो साहब कहते हैं कि ठेकेदार को पकड़ो। ***कनिका एक्सपोर्ट*** (ए-187 तथा ए-190 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में हैल्पर को 8 घण्टे के 200 और टेलर को 360 रुपये। यूनियन के पास गये थे, लीडर आये और कम्पनी से पैसे ले कर चले गये। ***ए एस के*** (28 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12 परमानेन्ट और 700 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में। वर्षों से काम कर रहे टेम्परेरी के आई डी बिना कारण बताये अचानक बदल दिये। ***स्टार ऑटो*** (321 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में महिला हैल्परों की तनखा 5500, पुरुष हैल्परों की 5800, और सी एन सी ऑपरेटरों की 7400 रुपये।

दिल्ली सरकार द्वारा 1 अप्रैल 2016 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक 9568 रुपये मासिक (8 घण्टे के 368 रुपये);
अर्ध-कुशल श्रमिक 10,582 रुपये मासिक (8 घण्टे के 407 रुपये);
कुशल श्रमिक 11,622 रुपये मासिक (8 घण्टे के 447 रुपये)।

सुरक्षाकर्मी

हम मजदूर समाचार के जरिये जगह-जगह ड्युटी कर रहे अपने गार्ड साथियों से यह बात कह रहे हैं। हम हर रोज 12 घण्टे ड्युटी करते हैं, कभी दिन में तो कभी रात में। रिलीवर नहीं आये तो 36 घण्टे लगातार ड्युटी पर भी भोजन के पैसे नहीं देते। साप्ताहिक अवकाश नहीं। गार्ड महीने के 30-31 दिन, साल के 365 दिन ड्युटी करते हैं। गार्ड के लिये कोई होली नहीं, कोई दिवाली नहीं, कोई ईद नहीं, कोई 26 जनवरी नहीं, कोई 15 अगस्त नहीं, कोई 2 अक्टूबर नहीं। आठ घण्टे की ड्युटी, साप्ताहिक अवकाश, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से के कानून लागू करें तो एक गार्ड की तनखा अब जो देते हैं वह 4000-5000 रुपये पड़ती है। हेराफेरियाँ और कितनी होती हैं इन्हें गार्ड रोज देखते हैं — झपकी के 500 काट लिये, शेव नहीं तो पैसे काट लिये, आई कार्ड नहीं पहना तो पैसे काट लिये। गार्ड इस सेक्युरिटी के हों चाहे उस सेक्युरिटी के, इस सब के बारे में आपस में चर्चा करना बनता है। आपस में तालमेल के लिये हम हैं

— हिन्दुस्तान इन्वेस्टिगेशन एण्ड सेक्युरिटी सर्विस
— सेन्टीनल सेक्युरिटी सर्विस; — चौकस सेक्युरिटी सर्विस
— हरियाणा इन्डस्ट्रीयल सेक्युरिटी सर्विस ; — ग्रुप 4 सेक्युरिटी
— टाइगर सेक्युरिटी ; — त्रिशूल सेक्युरिटी ; — डिवाइन सेक्युरिटी
— ग्लोबल मैनेजमेन्ट एण्ड कन्सलटेन्ट सेक्युरिटी सर्विस के गार्ड

ट्रिग सेक्युरिटी (मुख्यालय मुंबई) दिल्ली में 1500 गार्ड सप्लाई करती है। गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। महीने के 30-31 दिन, 12 घण्टे रोज ड्युटी पर, ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर गार्ड को 8154 रुपये। मार्च की तनखा 28 अप्रैल को जा कर दी। ई एस आई कार्ड गार्डों के पास हैं पर पी एफ नम्बर बहुत कम को बताये हैं। इन्टरनेट पर देखा तो कई वर्ष की पी एफ राशि के नाम पर मात्र 800-900 रुपये जमा हैं।

जी 4 एस सेक्युरिटी गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। दो पे-स्लिप। एक स्लिप में 8 घण्टे की ड्युटी के हिसाब से कुल घण्टे दिखाते हैं। दूसरी स्लिप में ओवर टाइम व अलाउन्स लिखा होता है, राशि होती है, परन्तु घण्टे के सामने खाली स्थान रहता है। दिल्ली में गार्डों की गतिविधियों के कारण पी एफ संगठन ने ग्रुप फोर कम्पनी को 134 करोड़ रुपये जमा करने का आदेश दिया — और, इधर भी पी एफ पूरी तनखा पर काटने लगे। लेकिन तनखा में बेसिक बहुत कम है, डी ए है ही नहीं, अलाउन्स ज्यादा हैं जिसका मतलब है गार्ड की ग्रेच्युटी राशि बहुत कम बनती है। भर्ती के समय ग्रुप फोर कम्पनी शिक्षा का प्रमाणपत्र लेती रही है लेकिन अब 2500 रुपये भी लेने लगी है।

ओमै *(पेज चार का शेष)*

फरवरी में कम्पनी की चार फैक्ट्रियों (2 धारूहेड़ा, 1 सिंगरावली, 1 आई एम टी) में दो दिन लाइनें बन्द करवाई। लीडर बोले थे 1800 रुपये बढवायेंगे, समझौता 900 पर किया, और यह 900 रुपये भी नहीं मिले — बोले चण्डीगढ में कोर्ट में मामला है। पैसे बढाने की बात में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 900 मजदूरों के नाम नहीं थे — पावर प्रेस पर कलाई से हाथ कटे एक मजदूर को परमानेन्ट करने की बात को 6 महीने हो गये हैं।

*मजदूर समाचार के अप्रैल अंक में **गुप्ता एग्जिम** (पृथला, पलवल) के कुछ मजदूरों की यह बात छपी थी कि नौकरी छोड़ने पर एक महीने की तनखा काट लेते हैं। इधर गुप्ता एग्जिम के कई मजदूरों ने बताया कि यह बात गलत है।*

पढिये जनवरी 2016 में प्रकाशित

अनुराधा बेनीवाल द्वारा लिखी पुस्तक

आजादी मेरा ब्रांड

'' ..... मैं अपने होने पर यकीन करती हूँ। मैं तुम्हारे होने पर यकीन करती हूँ। .... मैं सिर्फ मैं ही नहीं, इस बड़े ब्रह्मांड का एक हिस्सा भी हूँ , इस पर यकीन करती हूँ। मुझे कुछ पता है , और बहुत कुछ नहीं पता , इस पर यकीन करती हूँ।.......

'' .... तुम चलना। अपने गाँव में नहीं चल पा रही तो अपने शहर में चलना। अपने शहर में नहीं चल पा रही तो अपने देश में चलना। अपना देश भी मुश्किल करता है चलना तो यह दुनिया भी तेरी ही है , अपनी दुनिया में चलना। लेकिन तुम चलना। तुम आजाद, बेफिक्र, बेपरवाह, बेकाम, बेहया हो कर चलना।......

'' तुम चेलोगी तो तुम्हारी बेटी भी चलेगी..... दुनिया को हमारे चलने की आदत हो जायेगी। अगर नहीं होगी तो आदत डलवानी पड़ेगी, लेकिन डर कर घर में मत रह जाना।.... यह दुनिया तेरे लिये बनी है, इसे देखना जरूर। इसे जानना, इसे जीना। यह दुनिया अपनी मुट्ठी में ले कर घूमना, इस दुनिया में गुम होने के लिये घूमना, इस दुनिया में खोजने के लिये घूमना। इस में कुछ पाने के लिये घूमना, कुछ खो देने के लिये घूमना। अपने तक पहुँचने और अपने-आप को पाने के लिये घूमना ; तुम घूमना !''

बिचौलिये और मजदूर

✶ ***होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर*** (1-2 सैक्टर-3 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट-यूनियन तीन वर्षीय समझौते की घोषणा लीडरों ने 19 मार्च को की। परमानेन्ट वरकरों को 23, 300 रुपये वेतन वृद्धि। और , उत्पादन का अधिकतर कार्य करते ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 5000 मजदूरों की तनखा में 2500 रुपये की वृद्धि। रविवार के अवकाश के बाद , 21 मार्च को फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ हुआ तब ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे मजदूरों ने स्कूटर प्लान्ट और मोटरसाइकिल प्लान्ट , दोनों जगह चाय तथा भोजन का बहिष्कार आरम्भ किया। बी और सी शिफ्टों में भी इन मजदूरों का यह बहिष्कार जारी रहा। फिर 22 मार्च को भी कैन्टीनों में चाय-भोजन का बहिष्कार हुआ। होण्डा कम्पनी ने ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 5000 मजदूरों के 750 रुपये और बढाये। अब एक वर्ष वाले इन वरकरों को महीने के 13,050 रुपये; दो से चार वर्ष वालों के 14,350 रुपये ; और चार वर्ष से अधिक समय से यहाँ काम कर रहों को 15,300 रुपये। स्थाई मजदूरों को अब महीने के 70,000 रुपये के आसपास।

✶ ***चन्द्रा इंजीनियर्स*** (279 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की शिफ्ट आदि बातें। होली का समय था। बोले थे कि तनखा में देरी नहीं करेंगे , 7 तारीख को दे देंगे। नहीं दी। फिर बोले कि 10 को दे देंगे। नहीं दी। 11 मार्च को ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 50 मजदूर दिन में व रात को फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये। गेट पर बैठे रहे। 30 परमानेन्ट वरकर फैक्ट्री में काम करते रहे। तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे 12 मार्च को इक्ट्ठे दिये। कोई लीडर नहीं। पहले ही आपस में बातें कर ली थी। सब ने मिल कर कदम उठाया।

✶ ***नपीनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स*** (7 सैक्टर-3 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मजदूरों के बीच दुभान्त यूनियन ने बढाई है। सब मजदूरों ने योगदान दिया यूनियन बनाने में। अगस्त 2012 में रजिस्ट्रेशन के बाद सब मजदूरों की तनखा में बराबर वृद्धि की बातें 2 अप्रैल 2014 तक यूनियन करती रही परन्तु 3 अप्रैल को फर्क 8100 और 3100 रुपये वाला निकला। परमानेन्ट वरकर ही यूनियन के मेम्बर बन सकते हैं। ड्युटी 16 घण्टे होने **(शेष पृष्ठ चार पर)**

साझेदारी

✶ दिसम्बर-जनवरी-फरवरी-मार्च-अप्रैल में 13 हजार की जगह मजदूर समाचार की 15-16-17 हजार प्रतियाँ छापनी पड़ी हैं। आई एम टी मानेसर में तीन स्थानों पर, उद्योग विहार गुड़गाँव और ओखला औद्योगिक क्षेत्र में एक-एक स्थान पर, फरीदाबाद में 13 जगहों पर मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है। डाक द्वारा भी प्रतियाँ भेजी जाती हैं। इन्टरनेट के जरिये पी डी एफ रूप में भेजते हैं — इसके लिये अतिरिक्त प्रतियाँ छापनी नहीं पड़ती। नोएडा, बीकानेर, हिसार, चेन्नई, पुणे, बोकारो, भिवानी, लुधियाना, इलाहाबाद, नागपुर आदि स्थानों पर मजदूर समाचार की 5-10-20-50-100-150 प्रतियाँ मित्र बाँटते हैं। दिल्ली के इर्द-गिर्द के औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूर समाचार की बीस हजार प्रतियाँ प्रतिमाह आवश्यक लगती हैं। बाँटने में अधिक लोगों की साझेदारी के बिना यह नहीं हो सकेगा। सहकर्मियों-पड़ोसियों-मित्रों-साथियों को देने के लिये 10-20-50 प्रतियाँ हर महीने लीजिये और मजदूर समाचार के वितरण में साझेदार बनिये।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। अलग से जो समय चर्चाओं के लिये निकालते हैं उसकी सूचना चन्द लोगों को ही दे पाते हैं। तब अधिकतर से मुलाकात अकस्मात-सी होती है। पहले से सोच-विचार करने, सहज चर्चा के लिये पहले से पता होना आवश्यक लगता है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ कर रहे हैं। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— मंगलवार, 31 मई को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 30 मई को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— बुधवार, 1 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में मई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन नम्बर : 0129-6567014

कार्यस्थल की , रास्तों की , निवास स्थानों की रोचक बातें साझा करें सन्देश , चित्र , ऑडियो , वीडियो व्हाट्सएप पर भेज कर । व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >
< baatein1@yahoo.co.uk >

ई-मेल के लिये बेहतर होगा जीमेल वाली आई डी का प्रयोग करें।

ए एस के ऑटोमोटिव यूनिट 4 (सैक्टर -5 , आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 6 मई को सुबह वाटर कूलर में करन्ट से एक मजदूर की मृत्यु हो गई।

यह किया, यह नहीं किया, यह रहा परिणाम

करनाटक राज्य की राजधानी बेंगलुरु आज अनेकों प्रकार के उद्योगों वाला विशाल औद्योगिक शहर है। यहाँ सिलेसिलाये वस्त्र तैयार करने वाली 1200 फैक्ट्रियों में साढे पाँच लाख वरकर बताते हैं, जिनमें 80-90 प्रतिशत महिला मजदूर हैं। लाखों गारमेन्ट वरकरों ने सड़कों पर निकल कर फण्ड के मामले में सोमवार, 18 अप्रैल को बेंगलुरु शहर को थाम दिया। फिर 19 अप्रैल को और बड़ी सँख्या में मजदूर सड़कों पर एकत्र हुये, फिर शहर थाम दिया, शहर थम गया।

✶ भारत में अन्य स्थानों और अन्य उद्योगों की ही तरह बेंगलुरु में भी पी एफ निकालने के नये नियमों के बारे में गारमेन्ट फैक्ट्रियों में वरकरों में दो महीनों से चर्चायें चल रही थी। फण्ड के सम्बन्ध में जो भी जानकारी मिली उसे मजदूरों ने आपस में बाँटा, साझा किया। इस बारे में कन्नड़ भाषा के एक अखबार के समाचार की फोटोकापियाँ बना कर गारमेन्ट वरकरों ने एक से दूसरे वरकर, एक फैक्ट्री से दूसरी फैक्ट्री के मजदूरों के बीच पहुँचाया।

— रविवार, 17 अप्रैल को साप्ताहिक अवकाश के दिन पी एफ के बारे में होती रही बातों ने ठोस रूप लिया। सोमवार, 18 अप्रैल को सुबह 9 बजे शाही एक्सपोर्ट के 5000 मजदूर फैक्ट्री से निकल कर सड़क पर आ गये। देखते ही देखते, एक के बाद दूसरी फैक्ट्री के वरकर सड़कों पर निकल आये। सवा लाख गारमेन्ट वरकर बेंगलुरु की सड़कों पर। मजदूरों ने शहर को थाम दिया, शहर थम गया।

मामला ठण्डा करने के लिये केन्द्र सरकार ने पी एफ निकालने के नये नियमों को तीन महीने टालने की घोषणा तत्काल की।

— मंगलवार, 19 अप्रैल को और भी ज्यादा गारमेन्ट वरकर बेंगलुरु में सड़कों पर एकत्र हुये। लाखों मजदूरों ने फिर शहर को थाम दिया।

केन्द्र सरकार ने पी एफ निकालने के नये नियमों को फौरन रद्द करने की घोषणा की।

✶ बेंगलुरु पुलिस का एक उच्च अधिकारी बोला, "भीड़ का न तो कोई लीडर था और न ही कोई निश्चित माँग थी। जब उन्हें ज्ञापन देने को कहा जिसे हम आगे बढा सकें, तब महिलाओं ने बस यह कहा कि उन्हें उनका पी एफ का पैसा चाहिये, उन्हें न्याय चाहिये।"

— बेंगलुरु के गारमेन्ट वरकरों ने किसी को कोई आवेदन नहीं दिया, किसी को कोई ज्ञापन नहीं दिया।

— बेंगलुरु में सिलेसिलाये कपड़े तैयार करने वाली फैक्ट्रियों के मजदूर किसी लीडर के पास नहीं गये, किसी संगठन के पास नहीं गये।

— बेंगलुरु के गारमेन्ट वरकरों ने किसी कोर्ट-कचहरी में कोई केस नहीं किया।

✶ कर्ज में डूबती जा रही सरकार के पास पी एफ पेन्शन खाते में इस समय मजदूरों के करीब तीन लाख करोड़ रुपये हैं जिन्हें सरकार चबा रही है, डकार रही है। पी एफ निकालने के नये नियमों के जरिये सरकार ने मजदूरों के और एक लाख तीस हजार करोड़ रुपये पर कब्जा करने की चाल चली थी। केन्द्रीय श्रम मन्त्री, केन्द्र सरकार के अधिकारी, राज्य सरकारों के प्रतिनिधि, कम्पनियों के संगठनों के प्रतिनिधि, और बी एम एस-इन्टक-एच एम एस-एटक-सीटू यूनियनों के लीडर मिल कर पी एफ में जमा राशि (इस समय साढे आठ लाख करोड़ रुपये) का संचालन करते हैं। सरकारों, कम्पनियों, और यूनियनों ने मिल कर पी एफ से पैसे निकालने के नये नियम बनाये थे। सरकार की योजना चार करोड़ पी एफ खाताधारकों को और काटने की थी।

— बहुत पैसे दाँव पर लगे थे। एक बेंगलुरु के लाखों गारमेन्ट वरकरों का ही मामला नहीं था। पूरे भारत में फैले करोड़ों मजदूरों से जुड़ी थी बात। इसलिये 18 अप्रैल को बेंगलुरु में लाखों वरकरों के कदम से सरकार पीछे हटी, तीन महीने के लिये नये नियम स्थगित किये। पुलिस लगाई, धारा 144 लगाई। लेकिन 19 अप्रैल को और ज्यादा मजदूर बेंगलुरु में सड़कों पर एकत्र हुये तब सरकार नये नियमों को रद्द करने के लिये मजबूर हुई। लाखों मजदूरों के कदमों ने करोड़ों मजदूरों को राहत दी।

— कोई लीडर नहीं, कोई प्रतिनिधि नहीं, कोई बिचौलिये नहीं। सौदेबाजी के लिये, समझौता वार्ता के लिये कोई नहीं। यह लाखों मजदूरों द्वारा स्वयं विचार करना, खुद फैसला करना, स्वयं एक्ट करना-निर्णायक तौर पर एक्ट करना था इसलिये करोड़ों मजदूरों को राहत का जरिया बना।

समय है करोड़ों द्वारा स्वयं विचार-निर्णय-कदम उठाने का, इन्हें बढाने का।

सउदी अरब में

राजधानी रियाद में टावर बनाने वाली, जेद्दाह में एयरपोर्ट तथा विश्वविद्यालय बनाने वाली, मक्का में 2015 में निमार्ण के दौरान क्रेन हादसे में 107 लोगों की मृत्यु से जुड़ी दो लाख वरकरों वाली बिन लादेन ग्रुप सउदी अरब में बड़ी कम्पनी है। अनेक स्थानों से आते मजदूरों को फॉरेन वरकर्स कहा जाता है जबकि यह आज के वैश्विक मजदूर हैं, ग्लोबल वरकर हैं।

मार्च माह में रियाद में बिन लादेन ग्रुप के कार्यालयों के बाहर एकत्र हो कर वेतन विवादों में वैश्विक मजदूरों ने विरोध किये। खस्ता हाल बिन लादेन ग्रुप ने दो लाख में से 50 हजार मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। अप्रैल में बड़ी सँख्या में एकत्र हो कर ग्लोबल वरकरों ने मक्का में बिन लादेन ग्रुप के कार्यालयों के सामने हर रोज विरोध किया। शनिवार, 30 अप्रैल को मक्का में बिन लादेन ग्रुप कार्यालयों के सामने सात बसें फूँक दी गई। ■

बिचौ

(पेज तीन का शेष)

पर सब को 3 रुपये 25 पैसे प्रतिघण्टा भोजन के लिये थे, इधर बाकी को वही जबकि परमानेन्ट के 4 रुपये 94 पैसे प्रति घण्टा कर दिये। परमानेन्ट की पे-स्लिप में पद लिखते हैं जबकि 5-10 वर्ष से कैजुअल की पे-स्लिप में पद के सामने खाली स्थान। महीने में 2-2 घण्टे के दो गेट पास पुराने सब को लेकिन नये भर्ती को गेट पास नहीं। अब एक वर्ष के लिये भर्ती फिक्स टर्म ऑपरेटरों से मशीनें चलवाते हैं और पे-स्लिप में उन्हें हैल्पर दर्शाते हैं।

✶ ***सेबरोस*** (180 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में परमानेन्ट वरकर कोई नहीं। ओवर टाइम के 100 घण्टे को 80 बना देना, त्यौहार की 3 छुट्टी में 2 के पैसे खा जाना आदि। सब मजदूर, 80 लोग 11 अप्रैल को एच आर साहब के पास जा कर खड़े हो गये। साहब बौखला गया। सब वरकर खड़े रहे। पता नहीं क्यों 4 वरकर साहब को बताने-समझाने लगे। उन 4 का 12 अप्रैल को गेट बन्द कर दिया।

✶ ***ओमैक्स ऑटो*** (6 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में करीब 200 परमानेन्ट वरकर, सात-आठ वर्ष से यहाँ काम कर रहे 190 कैजुअल वरकर, और ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 900 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। यूनियन ने

(शेष पृष्ठ दो पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17

सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।